आपके लिखा

प्रिय संपादक,

संदर्भ के दोनों अंक पढ़े। मेरा एक सुझाव है कि संदर्भ में प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक शिक्षकों के लिए भी ऐसी सामग्री प्रकाशित की जाए जिससे उनको मदद मिले। क्योंकि प्राथमिक शाला तक बच्चों की उम्र ऐसी होती है कि वे तब अपने मस्तिष्क में प्रत्ययों का निर्माण करते हैं, शिक्षकों को प्रत्यय निर्माण और दृष्टिकोण में अनेक कठिनाइयां आती हैं। कभी-कभी शिक्षकों में उस दृष्टिकोण का अभाव होता है। इस दिशा में यदि संदर्भ में सामग्री हो तो शिक्षकों को बहुत मदद मिलेगी।

मीना जोशी
व्याख्याता,
पागनीस पागा, इंदौर

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' के लेख जहाँ तार्किक क्षमता बढ़ाने में सहयोगी हैं वहीं संदर्भ सामग्री के रूप में भी महत्वपूर्ण हैं।
दूसरे अंक में 'इतिहास - ऐसे भी मिलते हैं सुराग' लेख विषय में रोचकता लाने और चिंतन को बढ़ावा देने में सार्थक कदम है। यतीश कानूनगो का लेख 'आगे पाठ पीछे सपाट' वर्तमान शैक्षणिक स्तर का एक नमूना पेश करता है। मैं सुझाव देना चाहूंगा कि स्थानीय परिस्थितियों से जुड़े लेख एवं सामग्री ज़रूर दी जाए। इससे शिक्षकों एवं छात्रों को मदद मिलेगी।

राजेंद्र दुबे (शिक्षक)
घाटली, इटारसी
ज़िला होशंगाबाद

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' का अंक मिला। मैं काफी समय से इस तरह की पत्रिका की कल्पना कर रहा था। मेरे विद्यालय के बच्चों ने पत्रिका को बहुत चाव से पढ़ा। इसका अंदाज़ा शायद इस बात

आपत्ति है .....

प्रिय संपादक,
आपने 'आया समझ में' लेख का अंत यह कह कर किया है –"फिर भी आगे बढ़ने का रास्ता तो किसी तरह ढूंढना होगा।"
इस निष्कर्ष पर मेरे कुछ सवाल हैं – मुझे ऐसा लगता है कि किसी भी बात को समझने, ग्रहण करने, आत्मसात करने का सवाल अंततः 'डिग्री' का सवाल है या यूं कहें कि 'स्तर' का सवाल है। समझ के अलग-अलग स्तर होते हैं।
दिन-रात और ऋतु परिवर्तन के बारे में आपकी जो समझ है उसके आधार पर आप कैसे कह सकते हैं कि वही सही है? हमें कैसे पता चला कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है? अगर हम याद करें तो पाएंगे कि हमें अपनी भूगोल की किताबों में पढ़कर पता चला था। किताब में रेखाचित्र वगैरह भी थे और तब पढ़कर वो बातें ठीक लगी थीं। और अब अगर हम डूबते सूरज के साथ सामने आते क्षितिज को देखें और कहें कि यह देखो पृथ्वी घूम रही है - वाह! तो शायद हम कुछ हद तक महसूस कर पाएंगे कि भूगोल हमसे क्या कहता है! पर एक हद के बाद तो इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता... क्योंकि, हो सकता है कि हमें डूबते सूरज के समय के

से लग सकता है कि मेरे शहर की रेडियो की दुकान से चुंबक और तार लेने के लिए बच्चों में होड़ लगी हुई थी, शायद उन्होंने 'चलती का नाम मोटर' को समझ लिया था। 'संदर्भ' में कुछ मॉडल बनाने के सस्ते तरीके देते रहें ताकि शिक्षक ऐसे मॉडल तैयार कर पढ़ाने के लिए सहायक सामग्री जुटा पाएं।

कल्याण सिंह रावत
ज़िला विज्ञान कांग्रेस
चमोली (उप्र.)

प्रिय संपादक,

संदर्भ का दूसरा अंक पढ़ा। रोहित धनकर का लेख 'कुछ बातें - बीते ज़माने की' प्रासंगिक लगा। मेरा लेखक एवं आपसे अनुरोध है कि लेख में बताए ताश के पत्तों का गणित अगर सुलझा दें तो हमारी जिज्ञासा भी शांत होगी।

नागरसिंह शर्मा
उप प्रधानाध्यापक, भादरा
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

कारण ये नहीं...

प्रिय संपादक,

मूंगफली में निषेचित फूल ज़मीन की तरफ जाता है और फिर भूमिगत हो जाता है यह सही है - परन्तु यह डंठल की लंबाई बढ़ने और नीचे की ओर झुक जाने के कारण नहीं है। दरअसल मूंगफली के फूल में अंडाशय और पुष्पासन के बीच एक ऊतक पाया जाता है (इसे अंतर्वेशी प्रविभाजी ऊतक कहते हैं)। जैसे ही फूल निषेचित होता है यह ऊतक क्रियाशील हो जाता है। इस ऊतक के क्रियाशील होने से जो नई कोशिकाएं बनती हैं वे अंडाशय और पुष्पासन के बीच एक कमज़ोर-सा डंठल बनाती हैं जिसे गायनोफोर कहते हैं। निषेचन के बाद अंडाशय के फल में बदलने के कारण अंडाशय भारी होता जाता है जिसका वज़न नहीं संभाल पाने के कारण गायनोफोर नीचे को झुकता जाता है और धीरे-धीरे ज़मीन में धंसता जाता है

डॉ. ओ.पी. जोशी
इंदौर

बादलों को देखना ही बहुत अच्छा लगता हो - या मानसून की बारिश का ज़ोरों से गिरना या ठंड में गर्म कम्बल में दुबकना....।
क्यों न बच्चों को अपनी प्रिय ऋतु पर कविता लिखने के लिए प्रेरित किया जाए - शायद वे जो 23 डिग्री का झुकाव न समझते हों जानदार नन्हें कवि निकलें! और हो सकता है कुछ बच्चों को भक-भक करता इंजन अच्छा लगता हो.... और काला-काला धुआं और सीटी का गूंजना... और वे सोच रहे हों कि ये दोनों (लेखक) यह जानने पर क्यों उतारू हैं कि मैं ऋतुओं के बारे में कितना समझ गया हूँ? मुझे सब पता है पर बस नहीं बताना.... मुझे ..... मैं अपना मुँह नहीं खोलने वाला.... ये पूछती रहें....
कुरेदती रहें... मेरा मतलब है कि बच्चे कभी-कभी बहुत 'मूडी' हो जाते हैं - है न! बहुत ज़िद्दी, बहुत सनकी - गोपनीय!
पर यह भी तो हो सकता है कि लेखकों ने यह लेख सिर्फ इसलिए लिखा हो कि शिक्षक तथा अन्य लोग ऐसे मुद्दों के बारे में सोचें - और लेखक स्वयं इस बात को इतना महत्वपूर्ण नहीं मानते कि बच्चों को ऋतु परिवर्तन आदि समझाने का कोई-न-कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा!!

राजा मोहंती, इंडस्ट्रियल डिज़ाइन सेंटर, आई. आई. टी., बम्बई